Prayag Shukla

While A Plane Zooms Past In The Sky

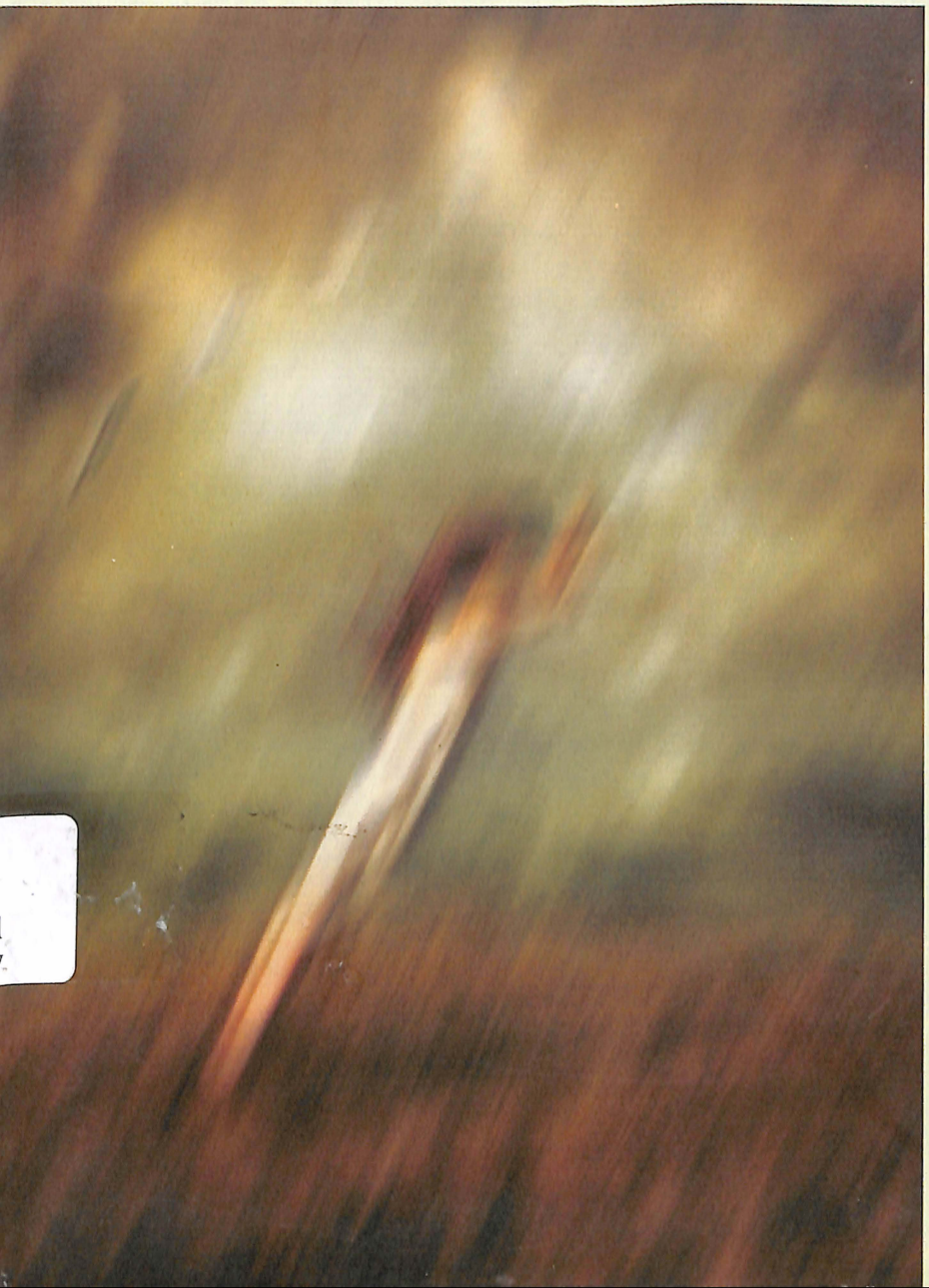

While A Plane Zooms Past In The Sky

A bilingual collection of Poems in Hindi and English

Prayag Shukla

Published by

Vagdevi Prakashan

Vinayak Shikhar
Near Polytechnic College
Bikaner 334003, India
Phone : 0151-2242023
vagdevibooks@gmail.com

891.43171
Sh 922W

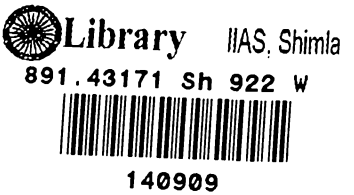

First published to coincide with
the poet's public engagements at
The London Book Fair, April 2009

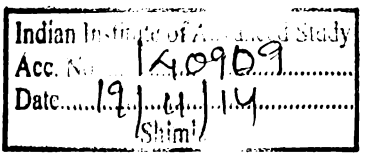

ISBN 978-81-87482-93-2

© Prayag Shukla
email : prayagshukla@gmail.com

First Edition : 2009 A.D.

Cover Desingn : Vagsarjan

Price : Rs. One Hundred only

Printed by Sankhla Printers, Shiv Bari Road, Bikaner 334003

WHILE A PLANE ZOOMS PAST IN THE SKY (*Hindi-English Poetry*)
by Prayag Shukla Rs. 100.00

Acknowledgements

Contribution of translators in the making of this book is gratefully acknowledged. The poems titled, Bygones, Here, Resting Place have been translated by Madhu B. Joshi/ Christi Merril/ Daniel Weissbort, and On this Earth, A Dream, Night Tree are translated by Manohar Bandhopadhyay/ Madhu B.Joshi/ Christi Merril/ Daniel Weissbort.

Harish Trivedi has translated Wayside Station, On visiting a palace turning into a ruin, The Lonely Sky, Two Statues, We, The Boy and Green Bench.

The poems translated by Girdhar Rathi are : we were not aware, The lost thing, Between one poem and another, As the shadows of evening grow, Night, Miles Apart, In Delhi, The ways of cooking and This I write.

All the other poems have been translated by the poet himself.

All translations are from the original in Hindi.

Several of these translations have appeared before in the following publications : *The Chicago Review, Indian literature, The little magazine* and an anthology published by penguin India.

Contents

लड़का The boy 6-7

हरी बेंच Green Bench 8-9

अकेला आकाश The Lonely Sky 10-11

दो मूर्तियाँ Two Statues 12-13

हम We 14-15

जितनी देर में ऊपर से गुज़रता है एक हवाई जहाज़
While a plane zooms past in the sky 16-17

होटल के कमरे में रात को Who's out there on a motorbike? 18-19

जैसे बहुत दूर से There will be a day 22-23

दिल्ली में In Delhi 24-25

व्यंजन पकाने की विधियाँ The ways of cooking 26-27

यह लिखता हूँ This I write 30-31

खंडहर होते एक महल को देखने के बाद
On visiting a palace turning into a ruin 32-33

रात Night 36-37

हज़ारों मील दूर Miles apart 38-39

व्यतीत Bygones 40-41

यहाँ Here 44-45

मुक़ाम Resting Place 46-47

सपना A Dream 48-49

धरती पर On this Earth 50-51

रात का पेड़ Night Tree 52-53

हमें नहीं मालूम था We were not aware 54-55

खोई हुई चीज़ The lost thing 56-57

एक कविता से दूसरी के बीच Between one poem and another 58-59

जब शाम की छायाएँ बहुत लम्बी हो जाती हैं
As the shadows of evening grow 60-61

एक छोटा स्टेशन Wayside Station 62-63

For Varshita and Venkatesh

लड़का

सीढ़ियाँ चढ़ कर आता है वह लड़का
धम-धम करता दरवाज़ा।
जगा देता हमें नींद से—
अपनी चमकती आँखों के साथ,
कुछ पूछता, बताता
फिर खड़ा हो जाता चुपचाप दीवार
के पास,
देखता हमें।
'हम गए थे बहुत दूर,
घूम कर आए बहुत दूर सचमुच'
देखता खिलौनों को, धूप के रंग को
'कितना अच्छा है यह रंग'
आँख खोल कर हम कुछ देखें, अच्छी तरह
इससे पहले ही चला जाता है
बरामदे में, पुकारता किसी को,
वह लड़का।

The boy

Up the ladder he comes
Pounding at the door
He wakes us from sleep –
His bright eyes questioning,
Telling us something,
But, then he stands quietly,
Close to the wall,
His eyes still on us.
'We went far away,
a long way, indeed.'
Glancing at the toys, the colour of the sun,
'What a nice colour!'
and before we were able
to open our eyes and see,
the boy was gone, calling out a name
from the terrace.

हरी बेंच

पेड़ों से लिपटी हैं लताएँ, धमनियों में रक्त है
कभी उबलता, कभी शांत। अनेक टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियाँ हैं,
एक सीधी आत्मकथा से रहित दिन हैं
और कुछ अचरज से देखते हैं हम
कि हम हैं। वक़्त काटने के लिए हम किसी
दूसरे की जीवनी से कुछ सिरे चुनते हैं
और बराबर सोचते हैं कि दूसरे के सिरे
हम से कुछ ज्यादा हैं। हम कहीं एक बेंच
को भी चुनते हैं जो हरी है, हरी है
उसके ऊपर की छत। लेकिन दिन की धूप
और रात के अँधेरे में उसके रंग एक से
नहीं हैं, न हाव भाव। हम बार-बार
यहाँ लौट कर आते हैं जैसे कुछ भूल गए
हों। हम उस भूलने की याद करते हैं।
थोड़ी देर बाद पाते हैं कि सोचने
और याद करने के मकसद के न मालूम होने से
हम दोनों ऊब गए हैं। हम यानी मैं और बेंच।

हल्के अँधेरे में एक घोड़ा आता है अचानक
और घास और सूखे पत्तों के बीच मुँह
चलाता है। उसका आना एक राहत है।
हम सहसा ख़त्म हो जाने वाली छुट्टियों
की याद करते हैं। और एक कौंध की
तरह दिखती है पहाड़ों की ओर मुँह
किए हर मौसम में पड़ी वह बेंच
जिस पर आकर हम बैठते थे।

Green Bench

The trees have vines coiled round them,
Now blood in the veins
boils and then simmers down.
There are a number of crooked pathways,
Days, that have no straight
Autobiography.
Somewhat amazed we discover
that we exist. We pick out a few points
from other's life-stories
To while away the time, believing as ever
That they offer us more than our own.
We select a green bench, too,
With a thatch of green overhead
but its shade and appearance varies
with the light of day and dark of night.
Time and again we come back
as if looking for a thing we've forgotten.
We try and recall our forgetting.
But we tire of it too soon
Since we don't know the purpose
of all this. We, that is, the bench and I.

In the dark light suddenly a horse
appears and begins to graze
on the grass and dry leaves.
We get a respite.
and recall, that holidays
come to a sudden end.
Like a flash the bench looms up
Its face turned towards the mountains.
In every season –
We used to come here and sit.

अकेला आकाश

जब शहर सोता है
वह एक बैठा होता है बरामदे में।
बत्तियाँ जली रहती हैं सड़कों की।
पेड़ जागते हैं। नींद न आए जब तक।
एक स्त्री करवट बदलती है।
वायुयान उतरते हैं हवाई अड्डे पर।
एक कुली की टाँगें सपना देखती हैं
दूर गाँव का।

जब शहर सोता है
वह लौटता है भूकते कुत्तों की आवाज़ के साथ।
मिट्टी पहरा देती है पौधों के पास।
दमकल की घंटियों के कान रहते हैं चौकन्ने।

वह एक चिट्ठी लिखता है।
वह एक पछताता है।
एक पुराना मकान और भी पुराना होता है।
दीवारें फोड़ कर निकला पीपल
हवा को डराता है।
जब शहर सोता है
ऊँची जगहों की लाल बत्तियाँ झाँकती हैं
अकेली ऊँचाई से।

आकाश अकेला होता है
तारों के साथ।

The Lonely Sky

While the city sleeps
A man is awake
on the veranda.
Street-lamps burn away.
The trees are awake
till sleep triumphs.

A woman tosses in bed
Planes land at the airport
A coolie's legs dream of
a distant village.

While the city sleeps
another man returns to the noise of
barking dogs.
Near the plants
clay is on guard.
Firemen are all ears.

A man writes a letter,
Another has regrets.
An ancient house grows older.
A peepal sprouts through a wall,
bullying the wind.
While the city sleeps
Red signals peer down
From their solitary altitude.

The sky remains
Lonely with the stars.

दो मूर्तियाँ

दो बहुत पुरानी मूर्तियों की एक
तसवीर है यह
खंडहरों से खोद कर निकाली गई
एक स्त्री एक पुरुष
की मूर्तियों की तसवीर।
नाम और सन् नहीं मालूम।
सचमुच के थे ये दो स्त्री पुरुष
या दो शब्दों को लेकर बनाई
गई थीं ये मूर्तियाँ!
हवा चलने से दीवार पर चिपकी
हुई यह तसवीर फड़फड़ाती है—
दोनों की आँखें एक ही दिशा
में कुछ देखती हुईं अलग-अलग
लेकिन साथ।
रात के अँधेरे में भी हवा चलने से फड़फड़ाती
इस तसवीर में,
उन्हें देख लेता हूँ मैं।
नाम और सन् नहीं मालूम।
लेकिन यह भ्रम नहीं है मेरा
कि मैं ठीक-ठीक पहुँच जाता हूँ वहाँ
जहाँ बनाई गई थीं वे। तमाम नदियाँ नाले मैदान
पर्वत जंगल शहर सदियाँ पार करता हुआ।

Two Statues

This is a print of two
Very old statues
Dug out from the ruins.
Of a man and a woman.
Names and year unknown.
Were there really two –
a man and a woman,
or just words carved into statues?
Stuck to the wall the print
flutters in the wind.
Their eyes look
in the same direction,
but they see different things
at the same time.
The print flutters in the dark night
as the wind blows,
I can see them.
Names and year unknown.
I'm not deluded.
Across all the rivers
fields, mountains, woods
cities and centuries,
I feel I'm at the spot
where they were carved.

हम

हम तसवीरें देखते हैं
हम घास पर बैठते हैं
हम किताब पढ़ते हैं
खिड़की से बाहर झाँकते हैं

हम रात को जागते हैं
घड़ी देखते हैं
हम चिट्ठी लिखते हैं सोचते हैं

पैदल चलते हैं घर लौटते हैं
प्यार करते हैं खेलते हैं
बच्चों से बहस करते हैं दोस्तों से
चुप रहते हैं

हम नहाते हैं खाते हैं थकते सुस्ताते हैं
कई बार—कई-कई बार
मरने से बच जाते हैं।

हम अन्याय से लड़ते हैं
और नहीं लड़ते हैं
अपने में रहते हैं
और अपने में नहीं रहते
हम जानते हैं
और नहीं जानते हैं,
हम पछताते हैं,
और नहीं पछताते हैं।
हम अपना अन्याय
और अपना प्रेम लिए
एक दिन दुनिया से चले जाते हैं।

We

We see the albums
Sit on the grass
Read the books
Look out of the windows

We wake up at night
Mark time
Write letters
Think

We take a stroll, return home
Make love
Play with children
Argue with friends
We keep silent

We bathe and eat
Are tired, and rest
Often, quite often
We escape death

We fight against injustice
And we do not
We are engrossed in ourselves
And we are not
We know
And we do not know

We repent
And we do not
We depart from earth
Along with love
Along with the injustice
All our own

जितनी देर में ऊपर से गुज़रता है एक हवाई जहाज़

जितनी देर में ऊपर से गुज़रता
है हवाई जहाज़ उतनी देर में
कुछ चींटियाँ चींटी चाल से
बढ़ लेती हैं एक पेड़ के गिर्द
उतनी देर में कपड़े सुखाती
एक औरत तार पर टाँग देती
है दो कपड़े,
उतनी देर में डाकिया डाल
देता है एक घर की चिट्ठियाँ।
खेत में खड़े किसान का फावड़ा
आ रहता है ज़मीन पर।
उतनी देर में भर लेता है
एक बछड़ा दो कुलाँचें।
उतनी देर में एक औरत लगा
लेती है तालाब में एक और डुबकी—
कभी-कभी उतनी-सी देर में
एक लड़की के हिस्से मे आ रहता
एक और दुख या कि सुख—
अगर हुआ जहाज़ बमवर्षक तो
इससे भी कितनी कम देर में
तहस-नहस हो जाते
ये सारे दृश्य।

While a plane zooms past in the sky

While a plane zooms past in the sky
Ants gather around a tree
A woman spreads out some clothes to dry
A postman delivers letters to a house
A farmer's spade strikes the earth
A calf runs merrily
A woman takes a dip in a pond
And a girl gets her share of bliss
or a sorrowful moment touches her
But if the plane happens to be a warplane
dropping bombs
All this disappears in a flash

होटल के कमरे में रात को

कौन है जो भगाए ले जा रहा है
मोटर साइकिल रात को
सड़कों पर
सोया है शहर जब।

क्या है भगोड़ा वह
या फिर गया था वह छोड़ने या
लेने को किसी को स्टेशन!
या कि फिर रहा है लौट
किसी पार्टी से?
क्या वह रहा है जा तार घर?
या कि डाकू-उचक्का है?

कौन है जो भगाए ले जा रहा
है मोटर साइकिल?
क्या उसके पीछे है बैठी हुई
प्रेमिका उसकी
चाँद तक चली जाती?

घर पर कोई बीमार है?
या कि वह पुलिस में है?

या कि वह रहा है लौट
देख कर सिनेमा?

Who's out there on a motorbike?

Who's out there speeding fast
on a motorbike
(while the city sleeps)
ignoring signals?

A fugitive?
or had he gone to pick up or drop
someone at the rail station?

Merrily returning from a party?
Carrying an urgent message?
A burglar?
Robber?
Spreading terror?
Who's out there on a motorbike?
Is the pillion occupied by his beloved
stretching herself in ecstasy,
touching the moon?

Someone has taken ill at his house?
A cop?
Someone out of a movie?

चीरता हुआ रात को,
कौन है?
हत्यारा?
क्या है पसंद उसे
गाँठना सवारी भर—
घूमना रात को?

कौन है
एक बजे,
दो बजे
रात को

नींद फुटपाथों की
तोड़ता!
कुत्तों को भूँकता
छोड़ता!

कौन है जो भगाए ले
जा रहा है
मोटर साइकिल रात को?

डाक्टर, कवि—
किसकी आवाज़ यह, सवारी पर,
सुन पड़ती होटल के
कमरे से!

कौन है?

Who's out there,
piercing through the thick
of the night?
A murderer?
Someone just enjoying the ride?

Who's out there after midnight?
In these wee hours,
terrifying the darkened footpaths,
racing at lightning speed,
on a motorbike,
making the dogs bark?

A doctor?
A poet?
Who is the maker of this thunder
echoing in the hotel room?

Who is it?

Indian Institute of Advanced Study
Acc. No. 140909
Date.....
Shimla

जैसे बहुत दूर से

एक दिन किसी भी लौटने वाली
जगह में माँ न होगी।
हम लौटेंगे बहुतेरे घरों में।
हाथों में पते लिये कुछ नए घरों के
जहाँ उठ कर आ गए होंगे पुराने घर।
पर माँ न होगी किसी भी जगह।
धूप में थैला उठाए,
तपती ज़मीन पर तपती घास को देखते
हम ठिठक जाएँगे अचानक।
फिर झुकेगा हमारा हाथ
उठाने को थैला
जैसे बहुत दूर से।

There will be a day

There will be a day
When a visit to any place
Would be marked by the
Absence of mother.

We will go to many a home
With new addresses
Where the old dwellings
Show up.

But mother won't be there.
Lifting our bag
From the parched land
As if from afar,
Watching the grass,
We would stop
Frozen.

दिल्ली में

दिल्ली में भी कूकती हैं कोयल
झरते हैं पत्ते
चींटियाँ चढ़ती हैं पेड़ के तने पर
दिल्ली में।
दिल्ली में भी उड़ती हैं चिड़ियाँ
दिल्ली में भी दौड़ती हैं गिलहरियाँ।
आकाश दिल्ली में भी
हो जाता है लाल।

दिल्ली में भी उगते हैं तारे।
दिल्ली में भी उड़ती हैं
तितलियाँ!

हैं, हाँ, हैं—
ये सब भी
दिल्ली में।

In Delhi

Even in Delhi
Cuckoos call
Leaves fall
Ants crawl up the tree.

In Delhi, too
Sparrows fly
Squirrels hie
And red becomes the sky.

Even in Delhi
Rise the stars.
Even in Delhi
The butterfly darts.

These too,
Yes these too,
In Delhi.

व्यंजन पकाने की विधियाँ

रघुवीर सहाय की स्मृति को समर्पित

व्यंजन पकाने की विधियाँ कई हैं।
व्यंजन भी कई हैं।
स्वाद भी कई हैं ढेरों व्यंजनों के।
पर, व्यंजन, विधियों को
चकमा दे,
कब कैसे स्वाद को मधुर-तिक्त
करते हैं,
यही चमत्कार है।
चाहें तो हम इसे रहस्य भी कह लें।

हाथों का जस—
वह तो होता है।
उससे भी बड़ी चीज़ लेकिन
वह मन है, जो व्यंजन
पकाता है।
वह अदृश्य रहता है।

The ways of cooking

In memory of poet Raghuvir Sahay

Several are the ways of cooking,
Several the dishes,
And several the tastes of dishes aplenty.
A dish may still dodge
The ways of cooking,
And turn it sweet or sour.
A miracle this?
We could even say it's a mystery.

The touch of the perfect cook, of course,
Does count. Though
Greater yet is the heart
That cooks.
And it's invisible.

स्वाद जो आता है जीभ पर
जान वह कैसे
पर लेता है—
किस मन से व्यंजन पकाया गया

सामग्री—वह तो होनी होगी।
सामग्री बिन व्यंजन, यह तो
सुना नहीं।
हाँ, वह भी कैसे जुटाई गई,
यह महत्त्वपूर्ण है।

अन्त तब यही होगा
स्वाद का—
कैसे जुटाए गए
सामग्री मन व्यंजन विधियाँ।

The palate can make out
The way the heart lay
While the dish was cooked.

And, as for the ingredients,
They, too, count.
For whoever heard of a dish
Without them! Though
We must know how they are acquired.
The taste goes the way they are acquired.
That is: Ingredients,
The heart,
The dish,
And the Ways of Cooking.

यह लिखता हूँ

जल्दी-जल्दी सब गया बीत
आ गई उम्र उठ पड़ने की
ये वाहन ये सन्ध्या तारे
ये रोशनियाँ, ये पेड़-फूल
ये घर मकान दूकानें सब
सड़कें जिन पर सौ बार चला।
नदियाँ, ट्रेनें, चिड़ियाँ, फ़सलें
तन की सुगन्ध
मन की सुगन्ध
चीज़ें कितनी भूली बिसरीं
बाक़ी कितनी कुछ याद रहीं।

वे नावें कितनी दूर हुईं।

जो चित्रलिखित था वह पीछे
जो आगे है वह भी पीछे को
खिसक रहा,
पर अभी यहाँ मैं बैठा हूँ
यह लिखता हूँ,
यह जीवन है।

This I write

It's all gone, all too soon,
And it's time to get up and leave –
The vehicles and the evening stars
The lights, trees, the flowers
Houses, homes, the shopping arcades
And the paths I've traversed
Time and again.

Rivers, trains, sparrows, crops,
The body-fragrance
The mind-fragrance
Things so many I knew and forgot
And those that linger on in my thought.

And those boats – they have moved afar!

What was vivid is behind me.
What is ahead moves back.
Yet here, I sit, and
This I write:
It lives.

खंडहर होते एक महल को देखने के बाद

पत्थर के सिंहों और बाघों की आँखों पर
जमी हुई काई।
जहाँ-तहाँ आई उग घास।
दीठ इस महल की
हो जैसे पथराई!

निकट नदी—
अभी नहीं बारिश की—
कहीं-कहीं पानी भर।
घूमती निगाह में
खुली चौड़ाई!

बरस-मास-दिन अनगिन
प्रहरों की छाया में
भीत खड़ी हो मानो
सहसा घबराई!

पेड़ हैं ज़रूर
हरे, नए-पुराने।
नूपुर सुर
थे कभी।

अब वे कथाएँ

On visiting a palace turning into a ruin

Moss grown over the eyes
Of stone tigers and lions.
Grass sprouting here and there.
As if the Palace's sight
Had turned to stone.

River nearby
Run out of monsoon.
Just puddles here and there.
The eye roves
Over open scape.

In the shade of changing hours
Through countless years-months-days
The wall stands still
Frozen into panic.

Some trees stand green
Both old and young.
Once ankle-bells
Had tinkled here.

धुँधलाए दर्पण।
सन्नाटा चीरती—
चिड़िया उड़ आई
खुले किवाड़ों से
क्षण भर को
धूल भरी जागी
तसवीरें!

तो फिर
विदाई!

Mirrors grown misty.
Piercing the stillness
A bird flies in
Through flung open doors
Awakening for a moment
Dusty portraits.

Well, then,
Farewell!!

रात

रात है, कई-कई परतों
के भीतर रात।
बूँदें। खिड़की पर
पत्तों की थाप।
जाली पर, दरारों में,
बंद हो चुकी दुकानों के नीचे,
आकाश में, तारों के पास
एक छूटे हुए,
बंद पड़े घर में। रात।

Night

Night
Folds within folds within folds.
Night.
Droplets. The beat
Of leaves on the window.
Down the crevices, over the net,
Beneath the closed shops,
Through the skies, by the stars,
In the shuttered home left behind.
Night.

हज़ारों मील दूर

बच्चों को नींद में
छोड़ कर हम चले जाते हैं।
हमारी नींद में
बच्चे आते हैं
सुबह हम एक-दूसरे को
अलग-अलग
शहरों में पाते हैं।
एक-दूसरे से बातें करते
हज़ारों मील दूर।

Miles apart

We leave while the children are asleep.
They follow us
Into our dreams.
By the morning
We find ourselves in distant towns.
We talk to each other
Thousands of miles apart.
Nothing helps

व्यतीत

प्रभात त्रिपाठी के लिए

छोटे-छोटे अक्षरों में छपीं
रेल, डाक-तार की रसीदें
बतातीं ब्योरे
फेंक दी जाती हैं
काम आ जाने के बाद।

एक शाम ट्रेन की फ़ुरसत में
गड़ा कर आँख पढ़ जाता हूँ
मैं अक्षर-अक्षर
संख्या-संख्या
एक रसीद की।

पर जानता हूँ वह पढ़ना
मन लगा कर पढ़ना नहीं था
कितना कठिन होता जा रहा है
मनं लगा कर पढ़ना।
सहसा दीखते हैं बादल आकाश में
इतने-इतने बादल।
रुई रुई और घने भी
बादल के रंग के।

दीखते हैं खेत।

Bygones

For Prabhat Tripathi

Train tickets, postal receipts
Details printed in tiny letters
Thrown away
Once they've served their purpose.

One evening on the train
When I had nothing else to do
I scrutinized the countless
Little letters
Of a receipt.

But I know my heart
Wasn't in it
It's getting harder and harder day by day
To read with one's heart in it.
Suddenly I noticed the clouds in the sky
So many clouds
Thin as cotton and thick too
The colour of clouds.

I look out at the fields.

घिरे हुए बादल मन के
बरसते नहीं। दीखते भी नहीं उनके घिरने के रंग।
कितना कुछ छूट जाता है
बीतते समय के साथ
कितना कुछ
कि बहुत छोटे-छोटे अक्षरों में भी
समा पाना कठिन हो एक कापी में

और इस वक़्त तो कोई
कापी भी नहीं है पास।

होती भी तो भागती ट्रेन में
कैसे लिख पाता छोटे-छोटे अक्षर
बारीक, सधे।

आ गई है बारिश।

The clouds gathering in my mind
Refuse to rain.
I can't even see their colour.

So much is passing by so much
I can't put it into words
I don't have my notebook with me
And even if I had
How could I print neatly
On a moving train?

It's raining now.

यहाँ

यहाँ कोई कभी-कभी आता है
न यह जंगल है, न उजाड़
न इतनी लकड़ियाँ और फल हैं यहाँ कि चुने जा सकें।
बस्ती और टीले जैसी पहाड़ियों के
बीच की जगह है यह।
दिन भर गिलहरियाँ इस पेड़ से उस पेड़ पर चढ़ती हैं
असंख्य चींटियाँ हैं और चींटे,
झरे हुए सूखे पत्तों के ढेर हैं
और हरे पत्तों के बीच हैं पीले
होते हुए पत्ते। यहाँ वहाँ पड़े पत्थर हैं
और दोनों तरह की धरती है—
कहीं तपी हुई, कहीं नम। धूप है।
और कितना नीला आसमान। बादल
आते ही बदल जाता है
फिर हर चीज़ का रंग। फिर निकल आती है धूप।
चिड़ियाँ बोलती हैं और फिर चुप हो जाती हैं।
कभी कोई रुक-रुक कर करती है आवाज़
जैसे कोई रह-रह कर जागता हो।
फिर एक कौवा देर तक करता है काँव-काँव।
हवा आती है और सूखे पत्तों के साथ दौड़ती
है। फिर थम जाती है। फिर चलने लगती है हवा।
एक पगडंडी है जिस पर घंटों बाद कोई आता है।
और तने से लगे अधलेटे से कुछ कहता नहीं।
उठ पड़ता है अधलेटा हवा में घुली हुई
अपनी तरह की आवाज़ों के साथ।
देखता हुआ नीला आसमान।

Here

He would come here once in a while
This is neither wilderness, nor ruins
Not enough twigs and fruit here
To be picked.
This is a place between settled land
And sloping hills.
All day squirrels leap from tree to tree
Countless ants and insects
Piles of dried fallen leaves
And yellowing leaves among the green.
Fallen rocks strewn here and there
And both kinds of earth –
Baked dry in places, in others moist. There's sun.
And what a blue sky. Clouds
Change colour many times over
As soon as they come. Then the sun breaks through
Birds sing and then fall silent
Something stops and chirps again and stops
Like someone waking at night.
Then a crow caws a long-winded caw.
The breeze races with the dried leaves then
stills. Then starts to blow again. A footpath
where someone will come hours later
and say nothing to the one reclining against a tree trunk.
He sits up suddenly his voice dissolving
In the air. He gazes
At the blue sky.

मुक़ाम

हम कहीं दूर चले जाते हैं। वापस आते फिर।
और उस जगह का नाम मालूम नहीं।
आकाश छत नहीं है, एक नीली गहराई भी
नहीं, वह फैला हुआ नीला है
जिसका कोई शरीर नहीं। 'मुक़ाम' 'सब उसी मुक़ाम
पर पहुँचते हैं', फ़ैयाज़* ने कहा। फिर एक थाप है
शरीर से कुछ ले जाती हुई। हम सब डूब जाते
हैं। अनेकों बार मैंने अपने को डूबते हुए
देखा है। फिर वह शरीर वही शरीर नहीं रहता।

---

* तबलावादक फ़ैयाज़ खाँ।

Resting Place

We go somewhere far away. And then we return.
And don't know the name of the place.
The sky is not a ceiling, nor a deep blue
An expansive blueness
which has not been given body. "Resting place,"
intoned
Faiyaz*,
"The resting place is where we all arrive."
Then he beat his *tabla* once
Bringing us out of our bodies. Each one of us
drowned. So many times I have seen myself
drown. So that the body does not stay the same.

* Tabla player Faiyaz Khan

सपना

सपने में रात आई रात में नींद
उखड़ी हुई
एक भूला हुआ मकान दिखा
गाँव की एक गली फिर आ गई
बसें भीड़-भरी
न जाने किस इमारत की टूटी सीढ़ियों पर
बैठी मिलीं तुम
उदास
दिन डूबे जा रहे थे पानी में।

फिर बदला दृश्य
सूखी घास थी दोनों ओर
एक पगडंडी के।

खराब हो गई थी कपड़ों की इस्त्री।
टी. वी. का साबुन का विज्ञापन
बदरंग कर रहा था धुलाई !

वह रुलाई जैसी नहीं थी
पर आ रही थी
मैंने हड़बड़ाकर पुकारा दोस्तों को
जो चढ़ रहे थे हड़बड़ाकर बस में।

कोहरे में चली जा रही थी बस।
मैं भी था सवार
आई जान में जान।

A Dream

Night slipped into my dream
Into my troubled sleep
A forgotten house appeared
Next came a village alley
and crowded buses
You sat on the broken steps
of some building
sad
Days drowning in water

Then the scene changed
Dried-up grass on both sides
of the path.

My clothing got rumpled
The T.V. detergent ad.
Was staining my laundry!

It wasn't worth crying over
But the tears kept coming
I called to my friends in panic
As they hurried onto the bus

Driving through the fog
on the bus
I too was on it, was relief.

धरती पर

मैं देखता हूँ हर बार
कभी बहुत हरी कभी मुरझाई घास
पर ओस की नमी।
वर्षा की बूँदें।
धूप और छायाएँ। चाँदनी। अँधेरा।
पत्तियाँ छपी हुईं धरती पर।
मिट्टी की दीवारें घेरे हुए पेड़ों को।
घेरे हुए जैसे अनगिन दिन रातों को।

मैं देखता हूँ कई बार।

मकानों की चितकबरी दीवारें,
काला पड़ता हुआ दीवारों का रंग।
उगी हुई घास किसी मुँडेर पर।

देखता हूँ शाम की छायाओं में।

कभी चल रहा होता हूँ
धरती पर निकट निकट निकट।
सुनता हुआ चीज़ों को।
कभी देखता भागती ट्रेन की खिड़की से।
अपने को सुनते मकान, पेड़, घर, पहाड़, लोग।

कई बार।

On this Earth

I see the dew on grass
sometimes green sometimes withered.
Drops of rain.

Sunlight, shadow. Moonlight. Dark.
Leaves imprinted on the earth.
Mud-walls surrounding the trees.
Like countless days around the nights.

Often I see.

Mottled walls of houses
Paint darkening on the walls
Grass sprouting from the leaves.

I see evening shadows.

Sometimes, walking,
I draw close, closer, closer
To the ground underfoot.
Listening to things,
watching through the windows of a speeding train
house, tree, home, hill, people listening to themselves.

Often.

रात का पेड़

रात के पेड़ के पास जुगनू दमकते हैं
तारे चमकते हैं
रात के पेड़ के पास अधसोया रहता
है अँधेरा
बचपन।
रात के पेड़ के पास
टूटी नींद का घड़ा है
रात के पेड़ के पास है थकान
आसमान।
रात के पेड़ के पास एक गठरी है
भूली हुई।
रात के पेड़ के पास निशान हैं
पहचानने को दिन को।

Night Tree

Fireflies flicker by the night tree
Stars glitter
Darkness by the night tree
Half asleep
Childhood.
There's a pitcher of broken sleep
By the night tree
By the night tree tiredness
The sky
By the night tree bundle
Forgotten
By the night tree traces
telling of the day.

हमें नहीं मालूम था

हमें नहीं मालूम था कि हम मिलेंगे एक दिन
पर जब मिल जाते हैं लगता है
तय था हमारा मिलना। यह कविता केवल मनुष्यों
के बारे में नहीं है। हम बैठे रहते हैं गुमसुम
कभी भीतर से अशांत। हम यानी मैं कुछ सीढ़ियाँ
कुछ पेड़, पहाड़, लकड़ियाँ कभी आकाश धूप
छत आवाज़ें रात की दिन की।
जब हम सचमुच मिलते हैं
लगता है तय था हमारा मिलना।

We were not aware

Unaware, that we had to meet some day,
We meet and feel this is how
It had to be.

We sit together,
Silent,
Even restless. We,
That is, a flight of steps, trees, hills,
sometimes even the sky and the sun and the terrace,
and the sounds of the day and the night,
and myself.
whenever we meet,
we meet and feel this is how
It had to be.

खोई हुई चीज़

वह खोई हुई चीज़ नहीं मिलती
दिनों तक कितनी ही चीज़ों में उसकी
झलक आती है अँधेरे में हम उससे मिलती जुलती
चीज़ को उठा कर तौलने भी लगते हैं।
घर में रास्ते में बरसों बाद भी कौंध जाती
है वह खोई हुई चीज़। और जब चीज़ों के
खोने के बारे में बातें होती हैं,
वही याद आती है सबसे अधिक।

The lost thing

The lost thing is untraceable.
It's vague resemblance in other things
and a glimpse in the dark eludes us.
We even pick and try to weigh up
a number of other things,
as we go on looking for the lost thing.
Years pass, yet the lost thing
keeps playing hide-and-seek
in our own homes,
in the streets.
And whenever one hears people talk of lost things,
that one pricks our memory,
the most.

एक कविता से दूसरी के बीच

मेरी एक कविता से दूसरी कविता के बीच
वह है—वह सब जो उनमें समाया नहीं।

किसी ठहरी शाम में, किसी एकान्त में,
बहुत दिनों बाद किसी मित्र के पत्र में,
या सपने में, वर्षों पहले रहे हुए किसी
घर को देखने पर,
या बँधी हुई दिनचर्या के बीच
मिलती है उसकी झलक—

कभी कर जाती सुन्न
कभी जोड़ जाती किसी पेड़ से
देर तक देखने को लगातार उसे,
मानो उस सबको पा लेने को
कोई भी तरीक़ा आज़माने के लिए
उकसाती हुई।

Between one poem and another

Between my one poem and another
There is all that
they could not contain.

You might glimpse it
in the stillness at dusk,
in solitude,
in a friend's letter you received
after a long break,
in a dream of the house
in which you had lived,
or, in the thick
of the daily grind.

Sometimes it strikes you numb,
And at other times
It leaves you gaping at a tree
As if to prompt you to go ahead
And grasp it.

जब शाम की छायाएँ बहुत लम्बी हो जाती हैं

जब शाम की छायाएँ बहुत लम्बी हो जाती हैं
एक दीवार के पास।
फलों की तरह लटक जाती हैं
पेड़ों पर चिड़ियाँ।
सुन पड़ती है ट्रेन के जाने की आवाज़।
धूप में लेटे रहने के बाद
जागता है शरीर
इन सब में।

सड़कें। प्लेटफार्म। बसें। बहुत छोटे-छोटे स्टेशन।
पुलों के नीचे की गृहस्थियाँ।
मूँगफली के छिलके। मदारी के बंदर।
बर्तन माँज कर लौटती स्त्रियाँ।
पुराने किलों से धीरे-धीरे बाहर आते पर्यटक
हाथी। और स्तब्ध बाग़।
शोर करते खेलते बच्चे।
खेत में किसान। नदी में नावें।
चाय की दुकानें। घरों में बसे हुए दिन।
उठता हुआ धुआँ।
धरती के मन को छूती हुई घास।

करती हुई कविता
गुमशुदा की तलाश।

As the shadows of evening grow

As the shadows of evening grow
along a wall,
sparrows dangle
like fruits on a tree.
You hear a train whistling out.
The body wakes up
After a nap in the sun.

Roads, platform. Buses.
Small stations.
Dwellings beneath the bridges.
Monkeys with the jugglers.
Maids
Going home after washing the utensils.
Tourists emerging slowly
from the ancient fort.
Elephants. And the gardens mesmerized.
Playful noisy kids. Peasants
In fields. Boats in river.
Tea stalls.
Days at home within homes.
Rising smoke
The grass
touching the heart of the earth.

A poem engrossed
In search of the lost

एक छोटा स्टेशन

कुछ फूलों की महक थी
और फूल।
बच्चे बेच रहे थे बेर
दोनों में।
एक गहरी नीली फटी साड़ी पहने
बूढ़ी स्त्री एक,
भाग रही थी ट्रेन छूटने
की घबराहट में।

पीछे बहुत खुला आकाश था
और शुरू होते थे खेत।

भीड़ थी
और कोई चेहरा पहचाना न था।
लेकिन सब थे पहचाने
हुए लोग।

पीली पगड़ी बाँधे
एक अधेड़ बैठा था
पत्नी, कुछ बच्चे—
दूसरी गाड़ी के इन्तज़ार में।

Wayside Station

There was the fragrance of some flowers
And there were flowers.
Children were selling in leaf-bags
small wild plums,
An old woman in a dark blue torn sari
was running panting and panicking
to catch the train about to depart.

At the back there was a wide-open sky
where fields began
There was a crowd
And not a single familiar face.
But they were people who were quite familiar.

A yellow turban on his head
a middle-aged man squatted on the ground
with wife, a few children,
waiting for some other train.

Prayag Shukla, born in 1940, Kolkata, is a poet, fiction writer, essayist, translator and art critic. He has published nine volumes of poems, three novels and five collections of short stories in Hindi. He has also translated into Hindi Rabindranath Tagore's *Gitanjali* from the original Bengali, and Octavio Paz's poems from English. His own poems have been translated in English, German, Russian and Japanese. He has visited many countries in Europe and Asia and also the U.S.A., and has written about his travels.

He has won the Sahitya Akademi translation prize and has edited journals on fine arts and theatre. He is currently the editor of *Rang Prasang,* the journal of the National School of Drama, New Delhi.

He lives in Delhi/Bhopal, India.

Indian Institute of Advanced Study
Acc. No. 40909
Date 19.11.14
Shimla

Library IIAS, Shimla
891.43171 Sh 922 W
140909

9 788187 482932